International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(3): 206-212

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(3): 206-212
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 08-03-2017
Accepted: 09-04-2017

ओमप्रकाश
विशिष्टसंस्कृताध्ययन केन्द्र,
जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली

Correspondence
ओमप्रकाश
विशिष्टसंस्कृताध्ययन केन्द्र,
जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली

वेदान्त एवं बाईबिल में जीव, जगत् व ईश्वर की अवधारणा तथा इसका पर्यावरण के प्रति दृष्टिकोण से सम्बन्ध

ओमप्रकाश

प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान परंपरा में मुख्यतः दो धाराएँ हैं - श्रुति व स्मृति। शाश्वत मूल्यों का मूल रूप में प्रतिपादन श्रुति में है। जिन्हें युग-देश के अनुसार आनें वाली जीवन की समस्याओं के समाधान हेतु व्याख्यायित किया जाता रहा है, जो स्मृतियाँ कहलाती है। श्रुति व स्मृति में भी विरोधाभास होनें पर श्रुति को ही प्रबल प्रमाण माना जाना चाहिए। ऐसा शास्त्र स्वयं कहते हैं।[1] श्रुति को प्रमाण मानने वाले जितने भारतीय दर्शन हैं उनमें से वेदान्त प्रमुख व सर्वसमावेशक है।

चूँकि हर धार्मिक पंथ किसी न किसी दर्शन की नींव पर ही खड़ा होता है। वेदान्त दर्शन अन्य किसी दर्शन को नकारता नहीं है अपितु उसके सिद्धान्तों का समावेश करते हुए अपना सिद्धान्त प्रतिस्थापित करता है। इस दृष्टि से वेदान्त लगभग सभी भारतीय धार्मिक मतों के दर्शन को समझनें का आधार है। यह उत्तरकालीनतर है तथा लगभग सभी भारतीय दर्शनों यथा- सांख्य, न्याय, योग, बौद्ध, पूर्वमीमांसा आदि से इसका वाद-विवाद रहा है। इन सभी को पूर्वपक्ष के रूप में रखते हुए अपने सिद्धान्तों का विकास किया गया है। वेदान्त की इस विशेषता के कारण भारतीय जीवनदृष्टि को समझनें में वेदान्तदर्शन (अद्वैत वेदान्त) अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

भारत में प्राचीनकाल से ही धर्म, दर्शन व विज्ञान में समन्वय रहा है तथा ये एक दूसरे के पोषक रहे हैं। इनका विकास पृथक-पृथक न होकर संयुक्त्त रूप से हुआ है। इस कारण भारत के दार्शनिक सिद्धान्तों को समझने से यहाँ की धार्मिक, सांस्कृतिक दृष्टि समझ में आती है। वहीं दूसरी तरफ पाश्चात्य जगत् में रिलिजन व फिलोसोफी एक दूसरे के साथ न चलकर प्रायः विरोध में ही रहे

[1] स्मृतिचन्द्रिका, प्रथम खण्ड, पृ.१६

हैं। वहाँ के दृष्टिकोण व जीवन को प्रभावित करने में रिलिजीयस परंपरा के आधारभूत ग्रन्थों में बाईबिल अग्रगण्य है। जिसमें प्रतिपादित सिद्धान्तों से पाश्चात्य जगत् को समझनें की सहायक दृष्टि प्राप्त होती है। उपर्युक्त पक्षों को ध्यान में रखते हुए वेदान्त व बाईबिल में सत्ता विषयक विचार यानि जीव, जगत् व ईश्वर के स्वरूप पर विमर्श का प्रयास किया जा रहा है।

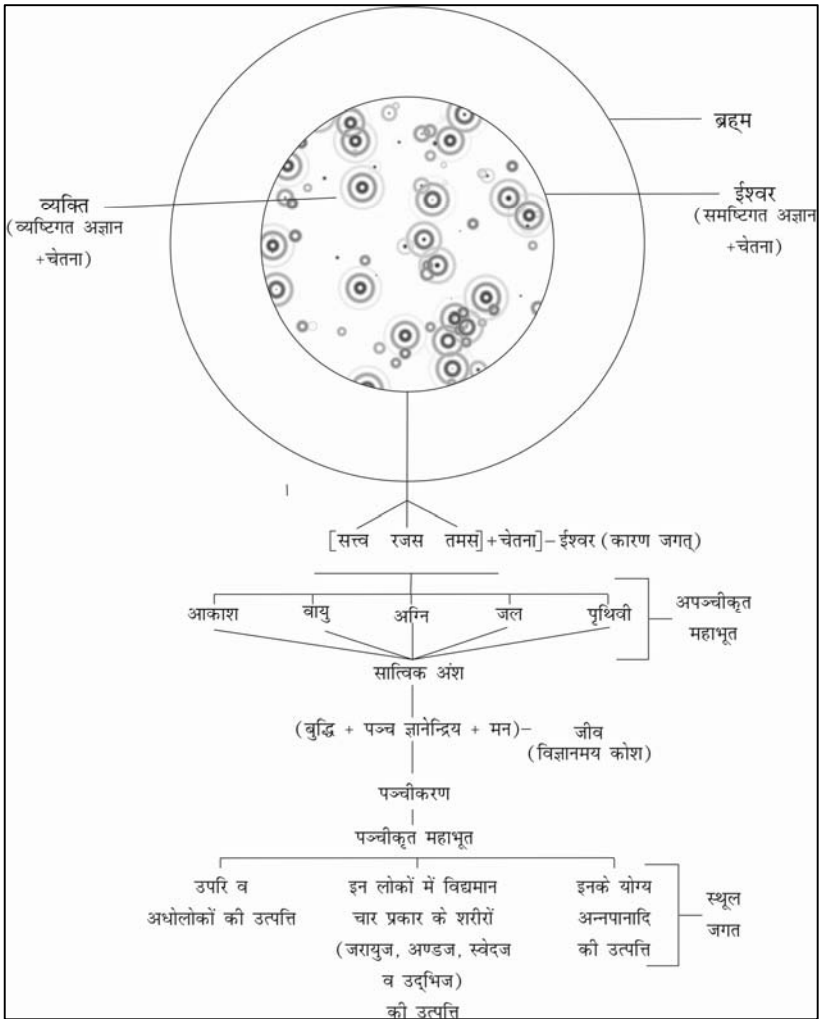

वेदान्त के अनुसार ईश्वर, जीव व जगत् की अवधारणा- वेदान्त के अनुसार ईश्वर, जीव व जगत् परस्परान्वित हैं। ये तीनों ही सत्तायें अज्ञान व चैतन्य युक्त हैं। ये तीनों पूर्ण चैतन्य के भीतर ही विद्यमान हैं। इन तीनों में अन्तर अज्ञान की भिन्नता को लेकर है। समष्टिगत अज्ञान से उपहित चैतन्य ईश्वर कहलाता है।[2] व्यष्टिगत अज्ञान से उपहित चैतन्य व्यक्ति की सुषुप्त अवस्था प्राज्ञ कही जाती है। इस समष्टिगत अज्ञान से आच्छादित चैतन्य अर्थात् ईश्वर में सत्त्वगुण का प्राधान्य होता है। जबकि जीव में तमोगुण की प्रधानता पायी जाती है।[3] इसे आरेख द्वारा निम्न प्रकार से समझ सकते हैं-

इस आरेख में दर्शाये अनुसार वेदान्त में जीव, जगत् एवं ईश्वर का आपस में गहरा संबंध है। वे एक दूसरे से

[2] इयं समष्टिरुत्कृटोपाधितया विशुद्धसत्त्वप्रधाना। एतदुपहितं चैतन्यं सर्वज्ञत्वसर्वेश्वरसर्वनियन्तृत्वादिगुणकमव्यक्तमन्तर्यामि जगत्कारणमीश्वर इति च व्यपदिश्यते सकलज्ञानावभासकत्वात्। - वेदान्तसार, पृ.१५७

[3] अस्याज्ञानस्यावरणविक्षेपनामकमस्ति शक्तिद्वयम्। ...तमः प्रधानविक्षेपशक्तित्मदज्ञानोपहितचैत्यन्यादाकाश...इयं बुद्धिज्ञानेन्द्रियैः सहिता विज्ञानमयकोशो...व्यावहारिको जीव इत्युच्यते। - वेदान्तसार,

समान इसलिए हैं कि इनमें चेतना व अज्ञान दोनों ही विद्यमान हैं। भिन्नता केवल इनकी अभिव्यक्ति की स्थिति को लेकर है। स्थूल जगत् में अज्ञान व चेतना दोनों विद्यमान रहते हैं लेकिन अज्ञान अभिव्यक्त रूप धारण किये रहता है। कारण जगत् के स्तर पर जिसे ईश्वर कहा जाता है वह सूक्ष्मजगत् के स्तर पर जीव तथा स्थूल जगत् के स्तर पर विश्व के रूप में रहता है। इस प्रकार ईश्वर सम्पूर्ण सूक्ष्म व स्थूल जगत् का कारण है।

वेदान्त व बाईबिल की जीव, जगत् व ईश्वर सम्बन्धी अवधारणाओं की तुलना- बाईबिल का ईश्वर जगत् का केवल निमित्त कारण है जबकि वेदान्त का ईश्वर जगत् का उपादान व निमित्त कारण दोनों है।[4] एक में ईश्वर जगत् को बनाकर उससे अलग हो जाता है जबकि दूसरे में ईश्वर जगत् के सृजन के साथ-साथ उसी में प्रविष्ट हो जाता है। [5] बाईबिल का ईश्वर जगत् को बनाता व नष्ट करता है [6]। जबकि वेदान्त का ईश्वर जगत् के रूप में स्वयं को अभिव्यक्त करता है और जब स्वयं में इसे लीन कर लेता है तब स्थूलजगत् अदृश्यमान हो जाता है। [7] केवल बीजरूप में ईश्वर में स्थूल व सूक्ष्म जगत् का सिमट जाना जगत् का नष्ट होना है। आरेख में दर्शाये गये अनुसार वेदान्त में ईश्वर से सृष्टि उत्कृष्ट तार्किक रूप में हुई है। जबकि ओल्ड टेस्टामेन्ट में शुरुआत में ही सृष्टि की उत्पत्ति के बारे में विस्तार से बताया गया है, जो तार्किक प्रतीत नहीं होती है। इसकी सृष्टि उत्पत्ति प्रक्रिया को जानने पर अनेकों प्रश्न अनुत्तरित रहते हैं। जैसे- ईश्वर नें सबसे पहले आकाश और पृथिवी को बनाया। यहीं प्रश्न उठ जाता है - जब ईश्वर अकेला विद्यमान है तब वह आकाश व पृथिवी को कहाँ से बनायेगा? क्या इन्हें स्वयं के भीतर से प्रकट किया या किसी अन्य वस्तु से? यदि स्वयं के भीतर से प्रकट किया तो फिर उनसे अलग कैसे हो गया? इस प्रकार के प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं है। बाईबिल के अनुसार ईश्वर ने उजाला व अन्धेरा पहले दिन बनाया तथा इसी समय पृथिवी पर दिन व रात बनाये। लेकिन सूर्य व चन्द्रमा तथा तारे चौथे दिन बनाये। वेदान्त के अनुसार स्थूल जगत् के अन्तर्गत महः, जनः, तपः आदि कई लोक हैं, इन लोकों में विद्यमान स्थूल देह तथा अन्न पानादि भी स्थूल जगत् के अंग हैं। अर्थात् ये सभी मिलकर स्थूल जगत् कहलाते हैं। इन सभी का निर्माण पञ्चीकृत पञ्चभूतों से होता है। जबकि बाईबिल में पञ्चभूतों की अवधारणा नहीं है। वहाँ जगत् के निर्माण में अग्नि की कोई भूमिका नहीं बतायी गयी है। न ही सम्पूर्ण जगत् के निर्माण में ये आपस में मिश्रित होकर सृजन करते हैं। इस प्रकार इनकी सामूहिक भूमिका नहीं है। बाईबिल के अनुसार ईश्वर ने आकाश, पृथिवी, जल व वायुमण्डल को बनाया। यहाँ पृथिवी से तात्पर्य सूखी भूमि से है न कि वेदान्त की तरह पञ्चभूतों में से एक भूत। इसी प्रकार आकाश से तात्पर्य वायुमण्डल से है। ओल्ड टेस्टामेंट के प्रारम्भ में ही विरोधात्मक वाक्य स्पष्ट दिखाई देते हैं। पहला वाक्य ही है- आदि में ईश्वर ने आकाश और पृथिवी बनाया। छठवां वाक्य है, तब परमेश्वर नें कहा, "जल को दो भागों में विभक्त करनें के लिए वायुमण्डल हो जाये" । आठवाँ वाक्य कहता है – परमेश्वर ने वायुमण्डल को "आकाश" कहा। इस प्रकार जहाँ पहला वाक्य सबसे पहले पृथिवी व आकाश के निर्माण का कथन करता है वहीं आठवाँ वाक्य वायुमण्डल को आकाश कहता है।

वेदान्त व बाईबिल की जीव, जगत् व ईश्वर संबंधी अवधारणायें व मनुष्य का पर्यावरण के प्रति दृष्टिकोण- बाईबिल के अनुसार विश्व अवयवों का संघात मात्र प्रतीत होता है न कि अन्तर्सम्बन्धित। बाईबिल के इस दृष्टिकोण ने कई शताब्दियों से फिलोसोफी व विज्ञान की प्रगति को प्रभावित किया है। ईश्वर के द्वारा जगत् के अवयवों को बनाकर उन्हें यांत्रिक रूप से चलने के लिए छोड़ दिया गया। इस प्रकार विश्व यांत्रिक रूप से कार्य कर रहा है। इस तरह के

[4] शक्तिद्ववदज्ञानोपहितं चैतन्यं स्वप्रधानतया निमित्तं स्वोपाधिप्रधानतयोपादानं च भवति। यथा लूता तन्तुकार्यं प्रति स्वप्रधानतया निमित्तं स्वशरीरप्रधानतयोपादानं च भवति। - वेदान्तसार, पृ. 178.

[5] तत्सृष्टवा तदेवानुप्राविशत् | तैत्तिरियोपनिषद् -2.6.6

[6] ओल्ड टेस्टामेंट - 1,6,7 (इन अध्यायों में ईश्वर द्वारा जगत् के सृजन व नष्ट करनें के बारे में बताया गया है।

[7] यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते। येन जातानि जीवन्ति। यत् प्रयन्त्यभिसंविशन्ति। तद्...॥ तैत्तिरियोपनिषद् -3.8

दृष्टिकोण पर क्लासिकल फिजिक्स नें प्रगति की। इसे फ्रिटजाफ कापरा ने इस प्रकार बताया है-

"Newton's equations of motion are the basis of classical mechanics. They were considered to be fixed laws according to which material points move, move, and were thus thought to account for all changes observed in physical world. In the Newtonian view, God had created, in the beginning material particles, the force between them, and the fundamental laws of motion. In this way, the whole universe was set in motion and it has continued to run ever since, like a machine, governed by immutable laws…the giant cosmic machine was seen as being completely causal and determinate."[8]

इस यांत्रिक दृष्टिकोण ने पर्यावरण को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया है। जबकि वेदान्त के अनुसार जगत् कारण, सूक्ष्म व स्थूल इनमें से हर स्तर पर आपस में जुड़ा हुआ है। वेदान्त में ईश्वर कारणरूप है तथा सभी के भीतर विद्यमान रहते हुए नियंत्रित करता है[9] न कि बाईबिल के ईश्वर की तरह बाहर से। [10] इस संबंध में प्रसिद्ध वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन का वह वाक्य भी स्मरणीय है जिसमें वह उस प्रकार के ईश्वर में विश्वास होनें की बात कहता है जो बाहर से नियंत्रित न करके अन्दर से नियंत्रित करता है। वेदान्त के अनुसार सभी में अन्तर्सम्बन्ध है। जगत् में यांत्रिकता नहीं अपितु चेतनता है। क्योंकि चैतन्य अज्ञान के साथ-साथ जगत् में हर जगह विद्यमान है। वेदान्त का यह दृष्टिकोण सभी वैज्ञानिक सिद्धान्तों व तथ्यों के लिए आधुनिकतम है। गहराई में प्रवेश करने पर सभी समस्याओं के समाधान के लिए यह अन्तर्सम्बन्ध ही शाश्वत सत्य के रूप में उपयुक्त है। आधुनिक भौतिकी की शुरुआत इस परस्परान्विता की समझ से हुई है।

"Quantum theory thus reveals as essential interconnectedness of the universe. It shows that we cannot decompose the world in to independently existing smallest units." [11] इसे क्वांटम भौतिकी की बेल्स थ्योरम और अधिक स्पष्ट करती है जिसे डेविड बोम ने प्रतिपादित किया। जिसके अनुसार एक कण व ब्रह्माण्ड में आपसी संबंध है। बाईबिल व वेदान्त के ईश्वर व जगत् के प्रति चिन्तन में बहुत भिन्नता देखनें को मिलती है। बाईबिल के अनुसार जीव किसे कहा जाये, यह स्पष्ट नहीं होता है। जीव ईश्वर से किस प्रकार सम्बद्ध है यह भी अनुत्तरित है। ईश्वर ने अनेक मछलियों, पक्षियों, जानवरों इत्यादि को बनाकर मनुष्य को बनाया। तथा मनुष्य को ही अपने स्वरूप जैसा बनाया न कि सभी प्राणियों को। "तब परमेश्वर ने कहा, "पृथिवी हर एक जाति के जीवजन्तु उत्पन्न करे। बहुत से भिन्न जाति के जानवर हों। हर जाति के बड़े जानवर और छोटे रेंगनेंवाले जानवर हो और यह जानवर अपनी जाति के अनुसार और जानवर बनाएँ" और यही हुआ" [12] "तब परमेश्वर ने कहा, "अब हम मनुष्य बनाएँ। हम मनुष्य को अपने स्वरूप जैसा बनाएंगे। मनुष्य हमारी तरह होगा। वह समुद्र की सारी मछलियों पर और आकाश के पक्षियों पर राज करेगा। वह पृथिवी के सभी बड़े जानवरों और छोटे रेंगनेवाले जीवों पर राज करेगा" ।[13] इस प्रकार बाईबिल के अनुसार पशु-पक्षी आदि का सृजन पृथक-पृथक हुआ है तथा इसमें ईश्वर की इच्छा व आदेश प्रभावी है। मनुष्य का निर्माण विशेष इच्छा से किया गया। ईश्वर ने मनुष्य को ही अपने जैसा बनाया अन्यों को नहीं। मनुष्य को पर्यावरण को नियंत्रित करनें का अधिकार दे दिया गया। जबकि वेदान्त में जीव की स्पष्ट परिभाषा दी गयी है। "... अयं विज्ञानमयकोशावच्छिन्नश्चिदात्मा जीवः" ।[14] इसमें सुःख-दुःख, कर्तृत्व, भोक्तृत्व, अभिमानित्व होता है। "अयं

कर्तृत्वभोक्तृत्वसुखित्वदुःखित्वाद्यभिमानित्वेनेहलोक

---

[8] The Tao of Physics, p. 65

[9] एतदुपहितं चैतन्यं सर्वज्ञत्व

सर्वेश्वरत्वसर्वनियन्तृत्वादिगुणकमन्तर्यामि जगद्कारणमीश्वर इति च व्यपदिश्यते...। - वेदान्तसार

[10] बाढ़ के समय जिन लोगों को बचाया गया था उनकी संख्या बढ़ गयी। वे सभी एक ही भाषा बोलते रहे।...तब 'यहोवा' ने कहा- "ये सभी ...इसलिए आओ हम नीचे चलें और इनकी भाषा को गड़बड़ कर दें।

[11] The Tao of Physics, p.-149

[12] ओल्ड टेस्टामेंट - 1.24

[13] वही - 1.26

[14] वेदान्तसार(विद्वन्मनोरञ्जनी) [वेदान्तविमर्श पृ. 229]

परलोकगामी व्यावाहारिको जीव इत्युच्यते" [15] । विज्ञानमय कोश से अवच्छिन्न चैतन्य जीव कहलाता है। विज्ञानमय कोश पञ्चज्ञानेन्द्रियों व बुद्धि से मिलकर बनता है। ये पञ्चभूतों के सात्त्विक अंश से बनते हैं। ज्ञानेन्द्रियाँ शब्द, स्पर्श, रूप, रस व गंध को ग्रहण करनें का कार्य करती हैं। वहीं बुद्धि अन्तःकरण की निश्चयात्मक वृत्ति का नाम है।[16] न्याय दर्शन तो बुद्धि को ज्ञान मानता है। साथ ही यह भी घोषित करता है कि व्यवहार ज्ञानपूर्वक होता है। न्याय के इस कथन व्यवहार ज्ञानपूर्वक होता है - "ज्ञानपूर्वक व्यवहारः" का व्यावाहारिक दृष्टि से वेदान्त समर्थन करता है। चूँकि पेड़-पौधे भी स्पर्श, प्रकाश (रूप) आदि के प्रति अपनी प्रतिक्रिया दर्शाते हैं। जब व्यवहार ज्ञानपूर्वक ही होता है। तब स्पष्टतः निष्कर्ष निकलता है कि पेड़-पौधों से लेकर मनुष्यादि सभी जीव हैं। जीव में सुःख-दुःखादि की भावना पायी जाती है। चूँकि पेड़-पौधों में व्यवहार पाया जाता है, निश्चयात्मिकता पायी जाती है। इस प्रकार वेदान्त के लक्षणानुसार स्वाभाविक है कि यह जीव पेड़-पौधों, पशु-पक्षियों, मनुष्यों, जानवरों सभी में संवेदनशीलता से युक्त है। इसे भारतीय वैज्ञानिक जगदीश चन्द्र बोस ने प्रयोगों द्वारा सिद्ध भी किया। वेदान्त उच्च व निम्न की भेद दृष्टि के लिए स्थान नहीं रखता है। इस दृष्टि से हम स्पष्ट रूप से कह सकते हैं कि जहाँ विश्व में आधुनिकता का प्रारंभ मनुष्यों के बीच समानता, स्वतंत्रता व न्याय के मूल्यों के आधार पर फ्रांस की क्रान्ति से माना जाता है। वहीं आधुनिकतमता का प्रारंभ वेदान्त की इस गहन दृष्टि को वैश्विक स्तर पर प्रकाश में लाने से ही हो सकता है। जिसमें समानता केवल मनुष्यों के मध्य न होकर पेड़-पौधों, पशु-पक्षियों, मनुष्यों, जानवरों सभी में है। भारतवर्ष में यह दृष्टि वैदिक ऋषियों की "भूतयज्ञ" नामक यज्ञ जो पञ्चमहायज्ञों में से एक में से एक है, में देखनें को मिलती है। वहीं सामान्यतः भारतीयों की इस अवधारणा में भी यह सत्य अनुस्यूत है कि पेड़-पौधे शयन करते हैं इसलिए रात्रि में इनकी पतियों को स्पर्श नहीं करना चाहिए। वर्तमान में पारिस्थितिकी की आधुनिकतम विधा "गहन पारिस्थितिकी"(**Deep Ecology)** वेदान्त के जीव विषयक विचार तथा जीव व जगत् के आपसी संबंध के प्रति दृष्टिकोण की व्याख्या प्रतीत होती है। वेदान्त के समतादायी विचार मानव को स्वयं को इस स्थूल जगत् का एक अङ्ग होने की मानसिक स्वीकार्यता देता है। अन्य जीवों की भी उतनी ही महता है जितनी मनुष्य की। जबकि बाईबिल के वाक्यों के अनुसार मानव विशेष है। उसे अन्य जीवों पर राज करनें का जन्मसिद्ध अधिकार मिला हुआ है[17] वर्तमान में भी अनेक प्राकृतिक विभीषिकाएँ व नित्य-नूतन समस्याएँ उभरकर आ रही हैं। उनके पोषण में मनुष्य को सभी प्राणियों पर अधिकार जमाने का यह दृष्टिकोण कहीं न कहीं कार्य करता रहा है। इन समस्याओं के समाधान की तरफ गहन पारिस्थितिकी जैसी विधाओं की समझ से ध्यान जा रहा है जो वेदान्त के समग्र दृष्टिकोण के करीब है। "The new paradiagm may be called a holistic worldview, seing the world as an integrated whole rather than a dissociated collection of parts. It may also be called an ecological view, if the term "ecological" is used in a much broader sense than usual. Deep ecological awarness recognizes the fundamental interdependance of all phenomena and fact that, as individuals and societies, we all are embedded in (an ultimately dependent on) the cyclical process of nature."[18]

नार्वेजियन दार्शनिक आर्नेनस (Arne Naess) के गहन पारिस्थितिकी (Deep Ecology) व शेलो इकोलोजी (Shallow Ecology) की अवधारणाओं के अनुसार हमें जहाँ डीप इकोलोजी वेदान्त के निकट प्रतीत होती है, वहीं शेलो इकोलोजी बाईबिल के -"Shallow ecology is anthropocentric, or human centered. It views human as above or outside of nature as the source of all value, and

[15] वेदान्तसार, पृ.-185

[16] बुद्धिर्नामनिश्चयात्मिकान्तःकरणवृत्तिः।- वेदान्तसार, पृ.185

[17] परमेश्वर नें मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाया।...परमेश्वर ने उनसे कहा,"तुम्हारे बहुत सी संतानें हों। पृथिवी से भर दो और उस पर राज्य करो। समुद्र की मछलियों और आकाश के पक्षियों पर राज्य करो। हर एक पृथ्वी के जीवजन्तु पर राज्य करो"। - ओल्ड टेस्टामेंट-1.27-28

[18] The Web of life – P. 6

ascribes only instrumental or 'use', value to nature. Deep ecology does not separate humans or anything else from the natural environment. It does not see the world not as a collection of isolated objects but as a network of phenomena that are fundamentally interconnected and interdependent. Deep ecology recognizes the intrinsic value of all living beings and views human as just one particular strand in the web of life."[19] बाईबिल में जगत् को सीमित रूप में देखा गया है। जो स्थूल रूप में दिखाई देता है वही जगत् है। ईश्वर भी इस स्थूल जगत् को बाहर से देखता रहता है। जबकि वेदान्त का ईश्वर बाहर से निगरानी नहीं करता है अपितु हर जगह विद्यमान रहता है। जीव भी ईश्वर की ही अभिव्यक्ति की एक अवस्था है। इसी कारण वेदान्त के अनुसार जो व्यक्ति अपने वास्तविक स्वरूप से जितना अवगत होता जाता है वह उतना ही अधिक व्यापक होता जाता है। तथा अन्य जीवों से भी अपना तादात्मय स्थापित करनें में सक्षम हो जाता है। यही कारण है कि भारत में अपने स्वरूप को जानने का प्रयास ही वास्तविक ज्ञानोन्मुखता है। जैसा कि मुण्डकोपनिषद् में आता है - शौनक अंगिरस से पूछता है, कस्मिन्नु भगवो विज्ञाते सर्वमिदं विज्ञातं भवति।[20] इसके उत्तर में अंगिरस बोले - "यथा पृथिव्यां ओषधयस्संभवन्ति, तदक्षरात् संभवतीह विश्वम्" [21]- जिस प्रकार पृथिवी पर पेड़-पौधे होते हैं उसी प्रकार यहाँ विद्यमान सब कुछ ब्रह्म से होता है। इसलिए ब्रह्म को जानने से इन सब को जान सकते हैं। इस प्रकार जीव का अपने स्वरूप के प्रति सजगता पर्यावरणादि सभी के प्रति स्वतः सजगता है। जैसा कि फ्रिटजाफ कापरा कहते हैं- "Ultimately, deep ecological awareness is spiritual or religious awareness. When the concept of the human spirit is understood as the mode of consciousness in which the individual feels a sense of belonging, of connectedness, to the cosmos as a whole, it becomes clear that ecological awareness is spiritual in its deepest essence".[22]

कई जगह न्यू टेस्टामेंट आध्यात्मिक दृष्टि से युक्त दिखाई देता है। जिसमें एक जगह कहा गया है -"I am in my Father, and ye in me, and I in you."[23] यह यीशु ने कहा है। ओल्ड टेस्टामेंट व न्यू टेस्टामेंट में ईश्वर व मानव के संबंध में भेद को इंगित करने के भाव को धारण किये हुए स्वामी विवेकानंद नें बहुत ही व्यवस्थित ढंग से बताया है - "...Therefore, the religions of the unthinking masses all over the world must be; and have always been, of a God who is outside of the universe, who lives in heaven, who governs from the place, who is punisher of the bad and rewarder of the good, and so on. As man advanced spiritually, he began to feel that He must be in him, that must be everywhere…And a few individuals who had developed enough and were pure enough went still further and at last found God. As the new Testament says – "Blessed are pure in heart, for they shall see God." And they found at last that they and the Father were one. You find that all three stages are taught by Great teacher in the New Testament."[24]

निष्कर्ष

इस प्रकार वेदान्त व बाईबिल दोनों ही जीव, जगत् व ईश्वर की सत्ता की चर्चा करते हैं। वेदान्त में ब्रह्म की सता के बारे में बताया गया है वहीं बाईबिल में इसका उल्लेख नहीं है। वेदान्त के अनुसार इस स्थूल जगत् के पिछे सूक्ष्म व कारण जगत् की भी सत्ता है। वहीं बाईबिल केवल स्थूल जगत् को ही जगत् कहता है। वहाँ सूक्ष्म व कारण की चर्चा नहीं है। इसी प्रकार बाईबिल में जीव एक स्थूल सत्ता है। लेकिन वेदान्त में यह एक सूक्ष्म सत्ता है। वेदान्त का ईश्वर अन्तर्निहित है वहीं बाईबिल का ईश्वर बाहर रहकर नियंत्रण रखता है। इस प्रकार एक ही तत्त्व से सम्पूर्ण जगत् की सृष्टि को व्याख्यायित करने से वेदान्त में जीव, जगत् व ईश्वर की अन्तर्सम्बन्धता स्पष्ट हो जाती है लेकिन बाईबिल में यह तार्किक दृष्टि से देखने को नहीं मिलती है। बाईबिल के अध्यात्मपरक वाक्यों यथा- 'I am in my Father, and ye in me, and I in you' पर यदि ध्यान दिया जाये तो बाईबिल वेदान्त के सत्य की ओर अग्रसर दिखाई देती है। वेदान्त तार्किकता से भी विश्व में अन्तर्सम्बन्धता को सिद्ध करता है। निरन्तर बढ़ती जा रही विश्व की

[19] वहीं, पृ.-7

[20] मुण्डकोपनिषद् - 1.1.3

[21] वहीं

[22] The Web of Life, P. 7

[23] Complete works of Swami Vivekananda, vol.4, p. 148

[24] https://www.vedanta.com/store/christ.php

पर्यावरणीय समस्याओं का समाधान इस गहन दृष्टि को ध्यान में रखते हुए स्वयं को प्रकृति का नियन्त्रक नहीं अपितु अंग समझकर विकास करने में ही संभव दिखाई दे रहा है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. ईशादि नौ उपनिषद्, गीताप्रेस गोरखपुर, सं. २०६९
2. सदानन्दयति, वेदान्तसार, परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली, **2004**
3. अभिमन्यु, वेदान्तविमर्श, परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली, **1961**
4. देवणभट्ट, स्मृतिचन्द्रिका, एल श्रीनिवास आचार्य **(**संपादक**),** नाग पब्लिकेशन्स **1988**
5. The Complete Works of Swami Vivekananda, Advaita Ashrama, Kolkata, 7th edition, 1986
6. Fritjof Capra, The Tao of Physics, Flamingo, Hammer Smith, London, 1982
7. Fritzof Capra, The Web of Life, Flamingo, Hammer Smith, London, 1997
8. The Old Testament, www.masihradio.com/../hindi-Bible-80/old-Testament.pdf
9. https://www.vedanta.com/store/christ.php